K. Nand M. A I Sem
28/01/2022

की आरम्भ। दोनों अर्थों में करने का प्रयास

जब हम किसी वस्तु या व्यक्ति का प्रत्यक्षण करते हैं, उसके सामाजिक अर्थ (social meaning) से भी प्रभावित होते है, प्रायः जब व्यक्ति किसी वस्तु का प्रत्यक्षण करता है, वह अपने सामाजिक मानकों एवं सामाजिक मानकों एवं सांस्कृतिक मूल्यों से प्रभावित होता है, जब वह किसी दूसरे व्यक्ति का प्रत्यक्षण करता है तो वह उसके बारे में तरह-तरह के अनुमान लगाता है। जैसे - व्यक्ति यह अनुमान लगा सकता है कि वह व्यक्ति किसी तरह का होगा तथा वह दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करेगा, आदि-आदि। विस्तृत अर्थ में (broadly) इन सभी का अध्ययन सामाजिक प्रत्यक्षण (social perception) कहलाता है।

समाज मनोविज्ञान में सामाजिक प्रत्यक्षण (social perception) का प्रयोग मुख्यतः दो अर्थों में किया जाता है, पहले अर्थ में इसमें उन सभी व्यक्तिगत (personal) एवं सामाजिक (social) कारकों का अध्ययन किया जाता है जिनसे व्यक्ति का प्रत्यक्षण प्रभावित होता है। इसमें व्यक्ति की आवश्यकता (need), अभिप्रेरक (motives), मूल्य (values) तथा सांवेगिक अवस्थाओं (emotional states) द्वारा व्यक्ति का प्रत्यक्षण ~~कैसे~~ ~~अब~~ प्रभावित होता है, का अध्ययन किया जाता है। दूसरे अर्थ में सामाजिक प्रत्यक्षण में इस बात का अध्ययन किया जाता है कि प्रत्यक्षणकर्ता (Perceiver) किस तरह से दूसरे व्यक्ति या

Date
24/12/2021

unit-I 1:32 आगमनात्मनमः अध्याय - 22 Arun Kumar Writer

K. Nand पाठ्यक्रम उत्तर, सुलेमान खान M.A I sem Advanced Social Psychology 28/01/2022

Q4 सामाजिक प्रत्यक्षीकरण का विस्तृत वर्णन करें।

सामाजिक प्रत्यक्षीकरण का प्रत्यय (concept)
1940 में विकसित हुआ, लेकिन इसका अर्थ
अस्पष्ट (vague) ही रहा है। कुछ मनोवैज्ञानिकों
ने व्यक्ति के प्रत्यक्षीकरण (Person perception)
को ही सामाजिक प्रत्यक्षीकरण माना है। हीडर
(Heider, 1958) के शब्दों में "निर्जीव वस्तुओं
के प्रत्यक्षीकरण को गैर-सामाजिक प्रत्यक्षीकरण
तथा व्यक्तियों के प्रत्यक्षीकरण को सामाजिक प्रत्यक्षी-
करण कहते हैं।" कुछ दूसरे मनोवैज्ञानिकों
ने दूसरे व्यक्तियों के व्यवहारों का मूल्यांकन
(appraisal) को सामाजिक प्रत्यक्षीकरण माना है।
चैपलिन (Chaplin, 1975 ने कहा है "सामाजिक
प्रत्यक्षीकरण का तात्पर्य दूसरे व्यक्ति के उस व्यवहार
की चेतना से है, जिससे उसकी मनोवृत्तियों,
प्रवृत्तियों तथा नियमों की अभिव्यक्ति होती है।"
क्रेच आदि (Kerch et al, 1982) ने सामाजिक
प्रत्यक्षीकरण का व्यवहार अन्तर्वैयक्तिक प्रत्यक्षीकरण
(interpersonal perception) या धारणा-निर्माण (impression
formation) के अर्थ में किया है। लिण्डजे एवं
एरोंनसन (Lindzey and Aronson, 1969) ने स्वप्रत्यक्षी-
करण (self perception) को भी सामाजिक
प्रत्यक्षीकरण का एक आवश्यक अंग माना है।
स्पष्ट है कि सामाजिक प्रत्यक्षीकरण
के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों के बीच पूर्ण
सहमति नहीं है। फिर भी अधिकांश मनोवैज्ञानिकों
ने इसे दो अर्थों में व्यवहार किया है
व्यक्ति - प्रत्यक्षीकरण (Person Perception) के
(क) अर्थ में। हम यहाँ सामाजिक प्रत्यक्षीकरण को

P.T.O